www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-9* *September 2025***

आधुनिक चिकित्सा और बैगा जनजाति की पारम्परिक स्वास्थ्य चिकित्सा पद्धति– एक विश्लेषण

संजय यादव

सहायक आचार्य, जनजातीय अध्ययन, कला, संस्कृति एवं लोक साहित्य विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, म.प्र.

प्रफुल्लचंद्र त्रिपाठी

सहायक प्राध्यापक, मेहदावल संतकबीर नगर, उत्तर प्रदेश

सारांश

भारत एक विविधतापूर्ण देश है। यहाँ आर्थिक, भौगोलिक, सामजिक, सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधताएं हैं। यहाँ विविध जातियां और जनजातियां निवास करती है। यहाँ विविध प्रकार की देशज औषधियां भी हैं। यहाँ आधुनिक विज्ञान और पारम्परिक ज्ञान दोनों समानान्तर रूप से विद्यमान और गतिमान हैं। जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक जीवन और स्वास्थ्य परम्पराएँ अत्यंत समृद्ध एवं विशिष्ट हैं। सम्पूर्ण भारत में सर्वाधिक जनजातियाँ मध्य प्रदेश में निवास करती हैं। जनजातीय समुदाय, विशेषतः बैगा जनजाति, अपनी अनूठी सांस्कृतिक परम्पराओं और स्वास्थ्य सम्बन्धी पारम्परिक ज्ञान के लिए प्रसिद्ध हैं। यह जनजाति सभ्यता जनित वर्जनाओं और आडम्बरों से दूर, प्रकृति की आदिम सुगन्ध से महकते वनफूलों के गोद में निवास करती है। बैगा जनजाति मूलतः मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में पायी जाती है। बैगा जनजाति को विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों (च्टज्ळे) की श्रेणी में रखा गया है। यह जनजाति मात्र एक आदिम जनजाति है। यह समुदाय प्रकृति–आधारित जीवन शैली अपनाता है और वनस्पतियों, जड़ी–बूटियों तथा आध्यात्मिक उपचार पद्धतियों के माध्यम से रोगों का उपचार करता है। बैगा जनजाति, जो मुख्यतः मध्यप्रदेश के मंडला, डिंडोरी, बालाघाट जिलों तथा छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में निवास करती है, अपनी विशिष्ट जीवन शैली और पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों के लिए जानी जाती है। यह समुदाय अपने परम्परागत उपचार और चिकित्सा पद्धति के लिए लोक–विश्रुत है। दूसरी ओर, आधुनिक चिकित्सा प्रणाली वैज्ञानिक शोध, औषधियों और उपकरणों पर आधारित है, जिसने अनेक जटिल बीमारियों को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त की है। परन्तु, जनजातीय क्षेत्रों में आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच, विश्वास की कमी और सांस्कृतिक असामंजस्य के कारण अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

कुंजी शब्द– पारम्परिक, उपचार, जड़ी–बूटी, प्रसव, बेवर

उद्देश्य प्रस्तुत शोधपत्र के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. यह शोधपत्र बैगा जनजाति की पारम्परिक स्वास्थ्य चिकित्सा और आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में सम्बन्ध, सहयोग और समन्वय की सम्भावनाओं का विश्लेषण करता है।
2. प्रस्तुत शोधपत्र में बैगा जनजाति परम्परागत औषधीय ज्ञान और आधुनिक चिकित्सा पद्धति की उन तक पहुँच को समझने का प्रयास किया गया है।

बैगा जनजाति

बैगा जनजाति भारत की एक विशेष रूप से पिछड़ी जनजाति (PVTGS) है, जो मुख्यतः मध्य प्रदेश के

डिंडोरी, मंडला, बालाघाट, शहडोल, उमरिया, राजनांदगांव और अनूपपुर के दुर्गम वनों और पर्वतों की उपत्यकाओं में निवास करती है। इन जिलों के अलावा बैगा जनजाति छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी निवास करती है। यह जनजाति गोंडवाना क्षेत्र की मूल निवासी मानी जाती है। बैगा जनजाति अपने विशिष्ट सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन शैली के लिए जानी जाती है। बैगा समुदाय की भाषा बैगानी है। बैगानी भाषा हिंदी और गोंडी भाषाओं से प्रभावित है। बैगा जनजाति की जीवनशैली पूर्णतः प्रकृति–आधारित है। इसलिए इसे प्रकृति–पुत्र भी कहा जाता है। इस जनजाति की निम्नलिखित उपजातियां हैं– भूमिया, बिंझवार, भारौतिया,नाहर या नारौतिया, भैना, कोडवान, और मुड़िया या मारिया (चौरसिया, 2024–1)। यह समुदाय प्रकृति के साथ सहमना जीवन शैली में रहता है। ये लोग जंगलों से लकड़ी, जड़ी–बूटियाँ और वन–उपज एकत्र कर जीवन यापन करते हैं। इनकी कृषि पारम्परिक है, जिसे वे ष्बेवरष् कहते हैं। यह कृषि आधुनिक तकनीकी से बहुत दूर है। इसमें बिना हल और बैल के, केवल जमीन खोदकर खेती की जाती है। ये लोग आत्मनिर्भर, सामूहिकता–प्रधान और अत्यंत सरल जीवन जीते हैं।

बैगा जनजाति भारत के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में बसी हुई है। मुख्यतः ये जनजातियाँ मध्य प्रदेश के शहडोल, अनूपपुर, मण्डला डिंडौरी और कटनी जिलों, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर और रायगढ़ जिलों तथा उत्तर प्रदेश के दक्षिणी–पश्चिमी कुछ हिस्सों में पाई जाती हैं। छत्तीसगढ़ में इनकी जनसंख्या 2011 में 89,744 थी, इसी प्रकार मध्य प्रदेश में इनकी जनसंख्या 2011 में 4,14,526 थी। पश्चिम बंगाल 13,423, झारखंड़ 3,583, बिहार 544, ओडिसा 338 और महाराष्ट्र 333 है। उत्तर प्रदेश में 47,393 है। उनमें से सोनभद्र जिला के बैगाओं को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता दी गई है। जिनकी संख्या 30,006 है। जबकि उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों में उन्हें 17,387 की आबादी के साथ अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है (जनगणना रिपोर्ट, 2011)। बैगा जनजाति की जनसंख्या का अनुमान 2011 की जनगणना के अनुसार 10 लाख से अधिक है। ये लोग मुख्य रूप से जंगलों में रहते हैं और पारम्परिक रूप से वनोपज संग्रहण, शिकार और कृषि से जुड़ी गतिविधियों में संलग्न रहते हैं। बैगा जनजाति की सामाजिक संरचना और संस्कृति अद्वितीय है।

बैगा समुदाय की धार्मिक मान्यताएँ प्रकृति और पूर्वजों की पूजा पर आधारित हैं। इनके सामाजिक संगठन में ओझा, पुजारी, और पारम्परिक चिकित्सकों (गुनी) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इनकी पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली लोकज्ञान, जड़ी–बूटियों और तंत्र–मंत्र पर आधारित है। यह पद्धति इनके रोग उपचार के साथ– साथ इनकी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग है। बैगा जनजाति को भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से पिछड़ी जनजातियों (Particularly Vulnerable Tribal Group & PVTGs) के रूप में अधिसूचित किया गया है (Ministry of Tribal Affairs, 2020)। ये लोग जंगलों में रहते हैं, और इनका जीवन प्रकृति पर आधारित है। बैगा समुदाय पारम्परिक कृषि, वन संग्रहण और लोक–चिकित्सा पर निर्भर रहता है। स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में बैगा जनजाति की मान्यताएँ गहन रूप से आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं से जुड़ी हुई हैं।

बैगा जनजाति की स्वास्थ्य परम्पराएँ

बैगा जनजाति अपनी भाषा, रीति–रिवाज, धार्मिक विशवास और परम्पराओं से बंधी है। इनकी अपनी लोक–नृत्य, गीत–संगीत, मनोरंजन के साधन और उपचार पद्धति है। जिससे ये असाध्य से असाध्य रोग का भी उपचार कर लेते हैं। जड़ी बूटियों के ज्ञान में ये लोग इतने सिद्धहस्त हैं कि स्वयं को वैद्य सुषेन का वंशज कहने में गर्व करते हैं। बैगा जनजाति की पारम्परिक स्वास्थ्य चिकित्सा उनके प्राकृतिक परिवेश, सामाजिक संरचना और आध्यात्मिक विश्वासों से जुड़ी हुई हैं। यह जनजाति वनस्पति आधारित चिकित्सा प्रणाली, आध्यात्मिक उपचार और प्राकृतिक पद्धतियों पर भरोसा करती है। इनकी यह परम्परा पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से चली आ रही हैं।

वनौषधीय ज्ञान

बैगा जनजाति अपना उपचार पारम्परिक पद्धति से करती है। बैगा समुदाय स्थानीय जड़ी–बूटियों और वनस्पतियों का उपयोग करके बुखार, त्वचा रोग, पेट दर्द, सर्पदंश, और महिलाओं की स्वास्थ्य समस्याओं का उपचार करता है। बैगा क्षेत्रों में कुछ जड़ी बूटियां आसानी से सुलभ हो जाती हैं और बैगा लोग उसे अपने उपचार में प्रयोग करते हैं जैसे– वन प्याज (Urginea indica), वंश लोचन, सरई की पीहरी, कलिहारी (Gloriosa Superba), काली हल्दी (Curcuma Cacsia), वन सिंघाड़ा, ब्रम्ह रकास (Colocasia esculenta schott), तीखर

(Curcuma angustifolia), बेचांदी (Dioscorea hispida dennst), बिदारी कंद, वन सूरन, कसौंधी, कुलंजन, माई बेला की जड़, अंडी की जड़, चिटकी की जड़, किमाच (Mucuna pruririta), बेर की जड़, वन अंडी, मैनहर, भकरेंडा, बच (Acorus calamus), भैंस बच, पारस पीपर, लजनी छोटी दूधिया, नागरमोथा (Saiapras Rotandas), जरीया, रुहीना, अकरकरा (Spilanth qcumella), पथरचटा, हड़जुड़ी (Cissus quadrangularis), महुआ (Madhuca indica), काली धान, खांड़ाधार, चिरायता (Andrographis), चिरचिरा (अपमार्ग), सफेद मूसली, काली मूसली (Curuligo orchiodes), छोटी करेटी, मुलहटी (Gilisiracza glebra), मरोड़फल्ली, लडैया का पत्ता, गुड़मार, चौच भाजी, चकौड़ा भाजी, पकरी भाजी, हड़सिंघड़ी, ब्राम्ही (Bacopa monnieri), जोगी लटी, बनछुरिया की बेल, अमर बेल (Cuscuta refleÛa), भूतन बेल, बेल (Aegle marmeios), सरई छाल, मैदा छाल (Litsea glutinosa), अर्जुन छाल (Terminali), विघानाशी, सत्यानाशी, सिरमिली, सर्पगंधा (Rauvolfia serpenfina), सेमल (Bombat ceiba), अकवन (caltropis procem), हत्था जोड़ी, उल ठली, कुब्बी, हिरन चरी, गँवार पाठा, पाताल कुम्हड़ा, जटा शंकरी, अश्वगंधा (Sommifera Withania), वन तुलसी, भोज राज, तेंदू, धननियाँ, सनाय (Cassia angustifolia), बड़ी सतावर (Asparagus racement), नागदाना, करई, हुलहुलिया, छिंदी, बबूल (Acacia arabica), धनवंतरी, भिलवाँ (Semicarpus anacardium), गूलर (Ficis giomerata), लक्ष्मण कंद, पोटीया कंद, करंज (Pongamia pinnata), हुरुम कंद, भैंसा ताड़, किटी मार कंद, बांदी सांड बड़ी ऐंठी, छोटी ऐंठी, गिलोय (Timospora cordifo), बहला ककोरा, आमी हल्दी, जामुन, पुनर्नवा, लाजवंती, गोखरु (Xanthium strumarium), अडूसा (Adhatod), गुड़मार (Gymmena sylvestre), कुरकुट के पत्ते, साँप लोढ़ा आदि जड़ी–बूटियों का उपयोग जीवन भर चलता रहता है (डपैीतं, 2010)।

उदाहरण के लिए–

- बुखार में गिलोय (टीनोस्पोरा कोर्दिफोलिया), तुलसी (ओसिमम सेक्टस) और नीम (अज़दिराचता इंडिका) का काढ़ा दिया जाता है। मोतीझरा या मियादी बुखार में बनछुरिया बेल की जड़ का अर्क जल के साथ दिन में तीन बार देने तीन दिन तक देते हैं। गुर्बेल या गटारन की जड़ का अर्क देने से भी बुखार समाप्त हो जाता है (बनिक एवं नेमा, 2014)।
- मलेरिया बुखार में हुलहुलिया, छिंदी की जड़, बड़ी गटारन, गुरबेल और तुलसी का काढा पीने से बुखार समाप्त हो जाता है (शर्मा, 2015)।
- पेट सम्बन्धी रोगों में भुइं– अंवला (फाईलेंथस निरुरी), हरीरा (टर्मिनेलिया चेबुला) का उपयोग होता है।
- चोट या फोड़े में हल्दी, चिरायता और साल की छाल लगाई जाती है। चर्मरोग जैसे– दाद, खाज, खुजली जैसे रोग के लिए कुसुम वृक्ष के फल का बीज निकालकर उसका तेल शरीर में मलने से ठीक हो जाता है। छोटे टमाटर के पत्तों (पाताली) को पीसकर लगाने से भी खुजली या दाद ठीक हो जाती है (बासु, 1994)।
- हड्डियों के टूटने पर हडजोड के पौधे का प्रयोग करते हैं।
- भकरेडा का दातून तीन दिन तक करने से दांत के कीड़े मर जाते हैं (बोबन,1998)।
- बैगा समाज के लोग प्रसव–पीड़ा में भी वनौषधियों का सफल प्रयोग करने में सिद्धहस्त हैं। शीघ्र प्रसव के लिए अंडी की जड़ की अंगूठी पहनाते हैं। जोगी लटी (तावर) की जड़ गुड के साथ खिलने से प्रसूता की खुनी की कमी दूर होती है (ठींपद, 2007)।

झाड़–फूंक और तंत्र–मंत्र

जनजातीय समाज जादू–टोने अधिक विश्वास रखता है। ये लोग जड़ी बूटियों और झाड़–फूंक, तंत्र–मन्त्र से अपना उपचार करते हैं। बैगा समाज में यह मान्यता है कि कई बीमारियाँ भूत–प्रेत या बुरी आत्माओं के कारण होती हैं। अगर पुरे गांव में उल्टी–दस्त का प्रकोप हो जाता है तो ऐसा माना जता है कि इनके ठाकुरदेव नाराज हो गए हैं। जब किसी महिला को संतान नहीं होती तो लोग मरही देवी की पूजा करते हैं। ऐसे में 'गुनी' या 'ओझा' द्वारा मंत्र–जाप, नींबू–मिर्च, राख, और झाड़–फूंक से उपचार किया जाता है। यह उपचार केवल शरीर नहीं, बल्कि मन और आत्मा के लिए भी शान्ति लाता है। बैगा समाज में बीमारियों को केवल शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक समस्या भी माना जाता है। इसलिए ओझा या गुनी (पारम्परिक चिकित्सक) मंत्र–जाप, झाड़–फूंक, पूजा आदि का सहारा लेते हैं। यह प्रक्रिया रोगी और समुदाय दोनों को मानसिक सांत्वना प्रदान करती है। यद्यपि

की इस झाड़–फूंक की प्रक्रिया में इनकी अत्यधिक आर्थिक क्षति होती है (बोस, 2020)।

अनुभवजन्य ज्ञान

इनकी चिकित्सा प्रणाली अनुभव पर आधारित होती है। यह श्रुति और स्मृति परम्परा के आधार पर बिना किसी लिखित दस्तावेज़ के पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है। इन पारम्परिक पद्धतियों में न केवल उपचार का दृष्टिकोण है, अपितु यह बैगा समाज की सांस्कृतिक पहचान और जीवन–दर्शन का अभिन्न अंग भी है। इस परम्परा में उनकी सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहती है। बैगा जनजाति के बड़े–बुजुर्ग और वैद्य बहुत अनुभवी होते हैं। मंडला के रामखेलावन का कहना है कि उनके वैद्य इतने अनुभवी होते हैं कि हाथ के नस से बिमारी पकड़ लेते हैं। पीलिया को आँख, जीभ देखकर तथा हाथ के अँगुलियों के नाखून दबाकर बता देते हैं।

सामुदायिक उपचार दृष्टिकोण

बैगा जनजाति में सामूहिक जीवन शैली है। ये सहयोग और संतोष की भावना में अधिक विश्वास करते हैं। बैगा जनजाति में बीमार व्यक्ति की देखभाल केवल परिवार तक सीमित नहीं होती है। बीमार व्यक्ति के सेवा और उपचार में पूरा गाँव सहयोग करता है। सामूहिक अनुष्ठान, औषधि–संग्रह और मानसिक समर्थन इस प्रणाली की विशेषता है (Agarwal, & Meena, 2016)। यदपि की आधुनिकता इस परम्परा को प्रभावित कर रही है, फिर भी यह जीवित है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति का प्रभाव

औपनिवेशिक काल में लोग आधुनिक चिकित्सा पद्धति से अनभिज्ञ थे। जनसंख्या का भार नहीं होने से पर्यावरण शुद्ध था। लोगों को कम बीमारियाँ होती थीं। बैगा समाज तो बहुधा प्रकृति के गोद में निवासित होने के कारण बिमारियों से बहुत दूर था। निर्वनीकरण, औद्योगीकरण और जनसंख्या भार ने पर्यावरण को दूषित किया और बिमारियों वनांचलों तक पहुँच गयीं। बिमारियों के साथ बहुद्देशीय व्यापारिक कंपनियों ने अपनी दवाओं के लिए बाजार भी ढूढ़ निकाला। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद तीव्र गति से आरंभ हुई। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पी.एच.सी.), उप–स्वास्थ्य केंद्र (सब–सेंटर), मोबाईल चिकित्सा इकाइयाँ, और ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन जैसे प्रयासों के माध्यम से सरकार ने दूरस्थ क्षेत्रों तक आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ पहुँचाने का प्रयास किया। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य थाकृ टीकाकरण, प्रसूति सेवाएँ, संक्रामक रोगों की रोकथाम, और पोषण सुधार।

बैगा में भी आधुनिक चिकित्सा पद्धति ने धीरे–धीरे प्रवेश किया है, लेकिन इसके प्रभाव मिश्रित रहे हैंरू

सकारात्मक प्रभाव

- टीकाकरण के कारण बाल मृत्यु दर में गिरावट आई है।
- संक्रमणीय रोगों जैसे मलेरिया, टीबी आदि का प्रभावी इलाज सम्भव हुआ है।
- गर्भवती महिलाओं को संस्थागत प्रसव की सुविधा मिली है। साथ ही साथ टेटनस का टीकाकरण होने से जच्चा और बच्चा दोनों के मृत्यु दर में कमी आई है।
- स्वास्थ्य शिक्षा और पोषण सम्बन्धी जानकारी के प्रति जागरूकता हो रही है।

चुनौतियाँ

- बैगा समाज अपनी पारम्परिक चिकित्सा पर अधिक विश्वास करता है और आधुनिक चिकित्सा को ष्बाहरीष मानता है। इसलिए संस्कृति, विश्वास और आधुनिकता में टकराव की स्थिति बनी है।
- अधिकांश डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी स्थानीय भाषा नहीं जानते, जिससे मरीजों में असहजता बनी रहती है। उनकी बात को न समझ पाना उपचार में कठिनाई उत्पन्न करता है।
- दूरस्थ बैगा गाँवों में डॉक्टरों और नर्सों की उपस्थिति अक्सर नियमित नहीं होती। इसके पीछे एक मूल कारण आवास और आवागमन के साधनों का अभाव है।
- कई बार दवाओं और उपचार से आशानुरूप परिणाम न मिलने पर आधुनिक चिकित्सा के प्रति अविश्वास उत्पन्न होता है।

आधुनिक और पारम्परिक चिकित्सा के बीच समन्वय आवश्यक

बैगा जनजाति की पारम्परिक चिकित्सा प्रणाली और आधुनिक चिकित्सा विज्ञानकृ दोनों की अपनी–अपनी

विशेषताएँ और सीमाएँ हैं। जहाँ आधुनिक चिकित्सा, वैज्ञानिक प्रमाण, त्वरित निदान, और आपातकालीन उपचार प्रदान करती है, वहीं पारम्परिक चिकित्सा स्थानीय सुलभ संसाधनों, सांस्कृतिक विश्वासों, और समुदाय आधारित देखभाल पर आधारित होती है। इन दोनों प्रणालियों के बीच एक सेतु (इतपकहम) बनाना आज की स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था की सबसे बड़ी आवश्यकता है (बिवनकीनतल – ज्तपचंजीप,2019)। क्योंकि

- बैगा समाज में आधुनिक चिकित्सा के प्रति सीमित विश्वास है।
- बैगा समाज के पास दुर्लभ औषधीय ज्ञान है।
- बैगा समाज का परंपरागत औषधीय ज्ञान विलुप्त हो रहा है।
- जंगली जड़ी–बूटियों के संरक्षण की महती आवश्यकता है।
- पारम्परिक चिकित्सकों की सामाजिक स्वीकृति अधिक है।
- कई स्थानों पर जनजातीय समुदाय जड़ी–बूटियों से ही प्राथमिक उपचार करता है। आधुनिक और महँगी दवाओं तक उनकी आर्थिक पहुँच नहीं है।
- सरकारी स्वास्थ्य तंत्र की पहुँच सीमित और अपर्याप्त है।

समाधान के सुझाव

1. पारम्परिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया जाना चाहिए।
2. बैगा समुदाय के अनुभवी गुनी और वैद्य के ज्ञान को वैज्ञानिक तरीके से समझने का प्रयास हो और उसे प्रलेखीकृत किया जाए।
3. स्थानीय चिकित्सकों को प्रशिक्षण दिया जाय।
4. ओझा–गुनी को प्राथमिक स्वास्थ्य शिक्षा देकर उन्हें समुदाय–स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ा जा सकता है।
5. स्वास्थ्यकर्मियों को सांस्कृतिक प्रशिक्षण और परम्परागत ज्ञान प्रणाली का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
6. आधुनिक डॉक्टरों और नर्सों को जनजातीय संस्कृति, भाषा और विश्वास प्रणाली की जानकारी दी जाए।
7. ।ल्मै और लोक–चिकित्सा का समन्वय किया जाय।
8. आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी जैसी प्रणालियों के माध्यम से पारम्परिक औषधियों को एक वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया जाए।
9. स्वास्थ्य योजनाओं में समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित की जाए, जिससे निर्णय जनजातीय हितों को ध्यान में रखकर लिए जा सकें।

सरकारी प्रयास

2018 में राज्य सरकार और कुछ गैर–सरकारी संगठनों ने मिलकर मंडला ज़िले में एक एकीकृत जनजातीय स्वास्थ्य परियोजना शुरू की। इसका उद्देश्य था बैगा समुदाय को आधुनिक चिकित्सा से जोड़ना, साथ ही उनके पारम्परिक ज्ञान को भी मान्यता देना (Sharma & Jain, 2018)।

इस परियोजना के अंतर्गत

- स्थानीय गुनी/ओझाओं को प्रशिक्षण दिया गया, जिससे वे सामान्य बीमारियों की पहचान कर सकें और ज़रूरत पड़ने पर मरीजों को प्राथमिक स्वस्थ्य केंद्र या सामुदायिक स्वस्थ्य केंद्र (च्ब्ब् या ब्ब्ब्) तक भेज सकें।
- सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (ASHA वर्कर) की नियुक्ति की गई, जो बैगा भाषा बोलते हैं और पारम्परिक विश्वासों के प्रति संवेदनशील हैं।
- कुछ स्थानों पर औषधीय वनस्पति उद्यान विकसित किए गए, जिनमें बैगा समुदाय की उपयोग में आने वाली जड़ी–बूटियाँ उगाई गईं हैं।

परिणाम

- बैगा समुदाय में टीकाकरण दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी देखी गई।
- पारम्परिक चिकित्सकों और आधुनिक स्वास्थ्यकर्मियों के बीच विश्वास बढ़ा।

• अनेक गुनी/ओझा अब "स्वास्थ्य सहायक" के रूप में कार्य करने लगे हैं (Mishra & Soni 2021)।

मंडला जिले का यह उदाहरण दर्शाता है कि यदि पारम्परिक ज्ञान का सम्मान करते हुए आधुनिक चिकित्सा को स्थानीय संदर्भों में ढाला जाये तो स्वास्थ्य सेवाओं की स्वीकृति और प्रभावशीलता दोनों में बृद्धि होगी। यह प्रतिमान अन्य जनजातीय क्षेत्रों के लिए भी एक प्रेरणा बन सकता है। इससे वनौषधियों एवं दुर्लभ जड़ी बूटियों का संरक्षण सम्भव हो सकेगा। पर्यावरणीय संचेतना का विस्तार होगा।

निष्कर्ष

बैगा जनजाति की पारम्परिक स्वास्थ्य चिकित्सा की पद्धति, उनकी संस्कृति, विश्वास प्रणाली और जीवन शैली का अभिन्न अंग हैं। इन परम्पराओं में प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान, अनुभव आधारित ज्ञान और सामुदायिक सहयोग निहित है। दूसरी ओर, आधुनिक चिकित्सा प्रणाली ने विज्ञान आधारित उपचार, टीकाकरण, आपातकालीन सेवाएँ और गम्भीर रोगों के रोकथाम और निदान में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। बैगा जैसे जनजातीय समुदायों में आधुनिक चिकित्सा की प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब वह स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों और विश्वासों के अनुरूप कार्य करे। वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम पारम्परिक और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के बीच सम्मान और समन्वय को बढ़ावा दें। बैगा जनजति के औषधीय ज्ञान को अगर प्रोत्साहन और प्रशिक्षण मिले तो यह उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार लायेगा। साथ ही साथ उन्हें अपने क्षेत्र में रोजगार भी सुलभ होगा। बिलुप्त हो रही औषधियों का संरक्षण भी हो जायेगा। यह समुदाय अपनी गंभीर बिमारियों का आधुनिक उपचार करा पाने में सक्षम हो जायेगा।

यदि बैगा जनजाति की पारम्परिक चिकित्सा को एक 'पूरक पद्धति' के रूप में स्वीकार कर, वैज्ञानिक रूप से उसका अध्ययन और उपयोग किया जाए, तो यह जनजातीय स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार लाएगा। इसके अतिरिक्त यह हमारी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी सहायक होगा। इसलिए आज की सबसे बड़ी आवश्यकता एक ऐसे स्वास्थ्य प्रतिमान की है जो विज्ञान और परम्परा दोनों का सम्मान करे। यदि हम बैगा जनजाति जैसे समुदायों के पारम्परिक ज्ञान को स्वीकारते हैं तो हम सांस्कृतिक विरासत और स्वास्थ्य सेवाओं के संवर्धन में सफल हो सकते हैं। स्वास्थ्य के क्षेत्र में समावेशी दृष्टिकोण ही भविष्य की कुंजी है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची

1. Government of India, (2020), Report on Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs)- Ministry of Tribal Affairs.
2. सेंसेस रिपोर्ट 2011.
3. चौरसिया, वी. (2024). प्रकृति पुत्र बैगा, भोपालः मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी.
4. Mishra, B.K. (2010), Ethnomedicine Among Baiga Tribe of Central India. International Journal of Traditional Knowledge, Vol. 9(4), 104&114.
5. बानिक, ए. एवं नेमा, एस. (2014), बस्तर क्षेत्र छत्तीसगढ़ के आदिवासियों और ग्रामीणों द्वारा उपयोग की जाने वाली नवविज्ञान पद्धतियाँ और स्वदेशी घरेलू उपचार, द इंडियन फोरेस्टर, 140(2), 67–75.
6. शर्मा, आर.के. (2015). ट्राइबल हेल्थ एंड इन्डेजीनियस मेडिसीन. दिल्लीः रावत पब्लिकेशन.
7. बासु,एस. (1994). ट्राइबल हेल्थ इन इंडिया, (संपादित), दिल्लीरू मानक प्रकाशन.
8. बोबन जोसे, के. (1998), ट्राइबल एथनो मेडिसिनरू कांटीन्युटी एंड चेंजेज, दिल्लीरू ए.पी.एच. पब्लिशिंग.
9. Bhasin, Veena, (2007), Health Status of Tribal Women in India, Studies on

Ethno&Medicine] Vol- 1(1): 1.16.

10. बोसएन.के. (2020), ट्राइबल लाइफ इन इंडिया, दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट.
11. Agarwal, A., & Meena, R, (2016). The Role of Traditional Medicine in the Healing Practices of Baiga Tribe of Madhya Pradesh, Journal of Ethnopharmacology. 15(2), 134&142.
12. Choudhury, S., & Tripathi, S- (2019), Traditional Healing Systems of the Baiga Tribe: A Comparative Study with Modern Medicine- International Journal of Indigenous Studies, 8)4) 45-59.
13. Sharma, D, & Jain, M, (2018), Modern Medicine and Indigenous Healthcare: A Study of Baiga Tribe in Central India, Asian Journal of Traditional Medicine, 16,3, 213-222.
14. Mishra, S. Soni, S. (2021). EÛploring the Health Practices of the Baiga Tribe: Integrating Traditional Knowledge with Modern Medicine, Journal of Ethnobiology and Ethnomedicine, 17)1) 34-42.

Cite this Article-

'संजय यादव, प्रफुल्लचंद्र त्रिपाठी', 'आधुनिक चिकित्सा और बैगा जनजाति की पारम्परिक स्वास्थ्य चिकित्सा पद्धति– एक विश्लेषण', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:09, September 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i90003

Published Date- 02 September 2025